NEERAJ®

New Syllabus

N-502

प्राथमिक विद्यालयों में शैक्षणिक प्रक्रिया

(Pedagogic Processes in Elementary Schools)

Reference Book Based on the Syllabus of

N.I.O.S.

D.El.Ed.

By : Vaishali Gupta

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Sales Office:
1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Price: ₹ 120.00

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Admn. Office : **Delhi-110 007**
Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajbooks.com** *Website*: **www.neerajbooks.com**

	Typesetting by: ***Competent Computers***	*Printed at*: ***Novelty Printer***

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
9. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajbooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*
To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajbooks.com.***
No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.
We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)
1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110 006
Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: **info@neerajbooks.com** *Website:* **www.neerajbooks.com**

विषय–सूची

प्राथमिक विद्यालयों में शैक्षणिक प्रक्रिया

(Pedagogic Processes in Elementary Schools)

Sample QUESTION PAPER - 1 (Solved)	1–3
Sample QUESTION PAPER - 2 (Solved)	1–3

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ

खण्ड–1 : अधिगम एवं शिक्षण प्रक्रिया
(BLOCK-1 : LEARNING AND TEACHING PROCESS)

1.	विद्यालय के शुरूआती समय के दौरान अधिगम और शिक्षण **(Learning and Teaching during Early Schooling)**	1
2.	शिक्षण एवं अधिगम उपागम **(Approaches to Teaching and Learning)**	6
3.	शिक्षण और अधिगम की विधियाँ **(Methods of Learning and Teaching)**	14
4.	अधिगम और अधिगम केंद्रित उपागम और विधियाँ **(Learning and Learner Centred Approaches and Methods)**	21

खण्ड-2 : अधिगम, शिक्षण–प्रक्रिया का प्रबंधन
(BLOCK-2 : MANAGEMENT OF TEACHING LEARNING– PROCESS)

5.	कक्षा–कक्ष की प्रक्रिया का प्रबंध **(Management of Classroom Processes)**	27

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ
6.	शिक्षण एवं अधिगम सामग्री **(Teaching and Learning Materials)**	33
7.	बहु–कक्षा और बहुत–स्तरीय स्थितियों का प्रबंधन **(Management of Multi-grade and Multi-Level Situations)**	39
8.	अधिगम क्रियाओं का नियोजन **(Planning of Learning Activities)**	46
	खण्ड-3 : कक्षा अधिगम में उभरते मुद्दे **(BLOCK-3 : EMERGING ISSUES IN CLASSROOM LEARNING)**	
9.	समेकित एकीकृत अधिगम और शिक्षण प्रक्रिया **(Integrated Learning and Teaching Process)**	50
10.	असंगठित शिक्षार्थियों हेतु संदर्भित अधिगम प्रक्रियाएं **(Contextualizing Learning Processes and Materials)**	55
11.	अधिगम में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी **(ICT in Learning)**	61
12.	कम्प्यूटर अधिगम **(Computer-assisted Learning)**	65
	खण्ड-4 : अधिगम मूल्यांकन **(BLOCK-4 : LEARNING ASSESSMENT)**	
13.	निर्धारण तथा मूल्यांकन के आधार **(Basics of Assessment and Evaluation)**	71
14.	अधिगम एवं निर्धारण **(Learning and Assessment)**	80
15.	आंकलन के उपकरण एवं युक्तियाँ **(Tools and Strategics of Assessment)**	98
16.	आंकलन के परिणामों का प्रयोग करके अधिगम को बेहतर बनाना **(Using the fesults of Assussment for Imprany learing)**	99

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

Based on: **National Institute of Open Schooling (D.El.Ed.)**

प्राथमिक विद्यालयों में शैक्षणिक प्रक्रिया
(Pedagogic Processes in Elementary Schools)

समय : 3 घंटे] *[पूर्णांक : 70*

सामान्य निर्देश: *सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।*

प्रश्न 1. कोठारी आयोग की नियुक्ति कब की गई?

(क) सन 1964
(ख) सन 1974
(ग) सन 1970
(घ) सन 1968

उत्तर–(क) सन 1964

प्रश्न 2. किस समिति ने 1990 में शिक्षा में समाजवाद एवं व्यक्ति की सौहार्दपूर्ण वातावरण में प्रगति की वकालत की थी?

(क) राष्ट्रीय शिक्षा नीति
(ख) यशपाल समिति
(ग) आचार्य राममूर्ति समिति
(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर–(ग) आचार्य राममूर्ति समिति।

प्रश्न 3. शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर का उपयोग सर्वप्रथम किस सन में किया गया था?

(क) 1955
(ख) 1960
(ग) 1950
(घ) 1965

उत्तर–(ग) 1950

प्रश्न 4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य क्या था?

(क) सभी के लिए शिक्षा
(ख) शिक्षा के साथ रोजगार
(ग) लड़कियों के शिक्षा को प्रोत्साहन
(घ) अशक्त बच्चों को शिक्षा देना

उत्तर–(ग) लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहन।

प्रश्न 5. ''महिला सामाख्या'' नामक परियोजना का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(क) शिक्षा के माध्यम से महिला समानता
(ख) महिलाओं के लिए समाज में समानता
(ग) महिलाओं का सम्मान
(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर–(क) शिक्षा के माध्यम से महिला समानता।

प्रश्न 6. मैग्ने ने अधिगम की कितनी श्रेणियां या विभेद बताएं हैं–

(क) 6
(ख) 5
(ग) 4
(घ) 3

उत्तर–(ख) 5

प्रश्न 7. इनमें से कौन-सी अप्रेक्षित सहायक सामग्री है?

(क) चलचित्र
(ख) प्रोजेक्टर
(ग) प्राकृतिक असाधारण दृश्य
(घ) बुलेटिन बोर्ड

उत्तर–(घ) बुलेटिन बोर्ड।

प्रश्न 8. संविधान की धारा 45 व 46 के अनुसार भारतीय समाज के किसी भी वर्ग के व्यक्ति की प्रारंभिक शिक्षा हेतु क्या आयु सीमा निर्धारति की गई है?

(क) 3 से 10 वर्ष
(ख) 5 से 13 वर्ष
(ग) 4 से 11 वर्ष
(घ) 6 से 14 वर्ष

उत्तर–(घ) 6 से 14 वर्ष।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रश्न 9. अवलोकनात्मक तकनीक का अर्थ है–

(क) एक व्यक्ति के व्यवहार का अवलोकन व अभिलेखन करना

(ख) व्यक्ति के विकास का अवलोकन करना

(ग) व्यक्ति के ज्ञान का अवलोकन करना

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर–(क) एक व्यक्ति के व्यवहार का अवलोकन व अभिलेखन करना।

प्रश्न 10. शैक्षिक मूल्यांकन जरूरी है ताकि–

(क) शिक्षार्थी के अधिगम के विकास का मूल्यांकन किया जा सके

(ख) शिक्षार्थी के विकास का मूल्यांकन किया जा सके

(ग) अधिगम क्रिया का सही मूल्यांकन करने के लिए

(घ) शिक्षार्थी के ज्ञान का स्तर मापा जा सके

उत्तर–(क) शिक्षार्थी के अधिगम के विकास का मूल्यांकन किया जा सके।

प्रश्न 11. छात्रों के व्यवहार का शिक्षक के पर्यवेक्षण के औपचारिक रिकॉर्ड को क्या कहा जाता है?

(क) प्रोन्नति विवरण

(ख) प्रगति विवरण

(ग) कथात्मक अभिलेख

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर–(ग) कथात्मक अभिलेख।

प्रश्न 12. शिक्षक की वह विधि जिसका सूत्र है *''मूर्त से अमूर्त की ओर''*–

(क) संश्लेषणात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि

(ख) वस्तु विधि

(ग) दृष्टांत विधि

(घ) कथनविधि एवं व्याख्यानविधि

उत्तर–(ख) वस्तुविधि।

प्रश्न 13. गांधी जी द्वारा शुरू की गई शिक्षण विधि कौन-सी है?

(क) सुकराती विधि

(ख) वर्धा शिक्षा योजना

(ग) डाल्टन योजना

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर–(ख) वर्धा शिक्षा योजना।

प्रश्न 14. 'क्षेत्रगत गहन कार्यक्रम' किस प्रकार के बच्चे के लिए बनाया गया था?

(क) अशक्त बच्चों के लिए

(ख) लड़कियों के लिए

(ग) ग्रामीण बालकों के लिए

(घ) मुस्लिम अल्पसंख्यक बच्चों के लिए

उत्तर–(घ) मुस्लिम अल्पसंख्यक बच्चों के लिए।

प्रश्न 15. शिक्षार्थी केन्द्रित उपागम में अधिगम के आधारभूत स्तंभ कौन से हैं?

(क) जानने के लिए सीखना

(ख) करने के लिए सीखना

(ग) साथ रहने के लिए सीखना

(घ) ये सभी

उत्तर–(घ) ये सभी।

प्रश्न 16. बाल केन्द्रित कक्षा में कक्षा-कक्ष के परिवेश की मुख्य बातों को सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-23, प्रश्न 10

प्रश्न 17. विद्यालय में प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के उद्देश्यों का उल्लेख कीजिये।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, प्रश्न 9

प्रश्न 18. अधिगम हेतु निर्धारण की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-85, प्रश्न 4

प्रश्न 19. जांच सूची किसे कहते हैं उदाहरण के द्वारा समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-96, प्रश्न 10

प्रश्न 20. खेल विधि के सिद्धांतों पर प्रकाश डालिये।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-18, प्रश्न 10

प्रश्न 21. कक्षा-कक्ष प्रबन्ध का अर्थ समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-29, प्रश्न 5

प्रश्न 22. लड़कियों की शिक्षा के क्षेत्र में उनके निम्न नामांकन तथा प्रतिधारण स्तर के उत्तरदायी कारणों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-56, प्रश्न 6

प्रश्न 23. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 की प्रमुख बातें स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-57, प्रश्न 11

प्रश्न 24. शिक्षा में कम्प्यूटर की उपयोगिता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-67, प्रश्न 1

प्रश्न 25. मूल्यांकन से क्या अभिप्राय है? मूल्यांकन रणनीतियों का चयन किस प्रकार किया जाता है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-76, प्रश्न 10

प्रश्न 26. वृत्तांत (कथात्मक) अभिलेख को परिभाषित करते हुए इसके प्रमुख लक्षण बताइए। इसकी महत्वपूर्ण मार्गदर्शक बातें भी बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-109, प्रश्न 10

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्राथमिक विद्यालयों में शैक्षणिक प्रक्रिया
(Pedagogic Processes in Elementary Schools)

खण्ड-1 : अधिगम एवं शिक्षण प्रक्रिया
(Block-1 : LEARNING AND TEACHING PROCESS)

विद्यालय के शुरूआती समय के दौरान अधिगम और शिक्षण
(Learning and Teaching during Early Schooling)

1

पाठ का परिचय

प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों पर बल देने की आवश्यकता होती है। शिक्षा सभी छात्रों की पहुँच में होनी चाहिए तथा विद्यालय में प्रत्येक छात्र का नामांकन किया जाना चाहिए। कम से कम 14 वर्ष तक सभी बच्चों को विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। शिक्षा के स्तर में महत्त्वपूर्ण सुधार किया जाना चाहिए। ताकि छात्र शिक्षा के अनिवार्य स्तर को प्राप्त कर सकें। हमारे देश के कई राज्य ऐसे हैं, जहाँ आज भी छात्रों का नामांकन बहुत कम है। जिन राज्यों में नामांकन की दर बढ़ी है वहाँ छात्रों की उपस्थिति कम और विद्यालय छोड़ने की समस्या अधिक संख्या में बनी हुई है।

शिक्षण एक सोद्देश्य शैक्षिक संप्रेषण है। इसका उद्देश्य विद्यालय स्तर पर पढ़ायी जाने वाली विषय-वस्तु के माध्यम से छात्रों को ज्ञान, कौशल तथा समाज के मानक मूल्यों को प्रदान करना होता है।

सक्रियता प्रधान प्रणाली छात्रों की अभिरुचियों का निर्माण करती है। इसके द्वारा छात्रों के मानसिक कौशल का उपयोग अवश्य किया जाना चाहिए।

अधिगम के चार स्तम्भ होते हैं–पहला: ज्ञान प्राप्त करना, दूसरा: काम करना सीखना, तीसरा: साथ रहना सीखना तथा चौथा; स्व-बोध के लिए सीखना।

विद्यालय और घर बच्चे के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। यह विकास छात्र के शारीरिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, नैतिक, सामाजिक आदि पक्षों में देखा जा सकता है।

जब छात्र शारीरिक क्रियाकलापों में बढ़-चढ़कर भाग लेता है, तो उसका शारीरिक विकास होता है जिससे उसे संतुष्टि तथा आनन्द की प्राप्ति होती है तथा यह सब छात्र को आत्मविश्वासी, स्वावलंबी तथा सक्रिय बनाती है। खेलकूद, नृत्य, शारीरिक व्यायाम, योगासन आदि शारीरिक विकास के लिए उपयोगी होते हैं।

संज्ञानात्मक विकास में छात्र के मस्तिष्क की कोशिकाएँ बड़ी तीव्र गति से विकास करती हैं। छात्रों में सर्जनात्मकता विकसित करने के लिए उन्हें ऐसे कार्य दिए जाने चाहिए, जो उन्हें सोचने और जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें। छात्र के विकास के लिए कई मानसिक योग्यताओं का होना आवश्यक होता है। जैसे–प्रत्यक्ष ज्ञान, स्मृति, मौखिक क्रियाकलाप, कल्पना, बुद्धि, सर्जनात्मकता, जिज्ञासा आदि।

ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त संवेदनों को अर्थ देना ही प्रत्यक्ष ज्ञान कहलाता है। पुराने अनुभवों को जीवन में परवर्ती दिनों में पुन: प्रस्तुत कर देने की योग्यता को स्मृति कहते हैं। एक-दूसरे के साथ संप्रेषण करने के लिए छात्रों में मौखिक योग्यता का होना आवश्यक है। छात्र की कल्पनाशीलता उसके संज्ञानात्मक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पर्यावरण के साथ समुचित अन्त:क्रिया द्वारा बुद्धि का विकास होता है। किसी समस्या के नए और मौलिक समाधान तक पहुँचने के लिए नए तरीके से सोचने को सर्जनात्मकता कहते हैं। छात्र की जिज्ञासु प्रवृत्ति उसकी मानसिक योग्यता के विकास में सहायक होती है।

शिक्षक को विद्यालय और कक्षा में इस प्रकार का माहौल तैयार करना चाहिए जो छात्रों की संवेगात्मक भावनाओं का विकास करे। छात्रों की निष्पत्ति उनके संवेगों पर निर्भर करती है। यदि छात्र दुखी है, तो वह पढ़ाए जा रहे विषय पर ध्यान नहीं देता है। जिस कारण उसकी निष्पत्ति का स्तर गिर जाता है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अच्छे मानसिक स्वास्थ्य वाला व्यक्ति अपने आपको प्रसन्न व निपुण मानता है तथा चिन्ता, तनाव, भय आदि से मुक्त होता है। व्यक्ति के संवेग ऊर्जा निर्मुक्त करते हैं। नकारात्मक संवेग छात्र को मनोवैज्ञानिक या शारीरिक रूप से हानि पहुँचा सकते हैं। इससे छात्र में कुंहाएँ और तनाव पैदा होता है।

शिक्षक को सहानुभूतिपूर्ण और स्नेहपूर्ण व्यवहार से बच्चों के भय और तनाव को दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। शिक्षक को छात्रों के साथ मित्र की भाँति व्यवहार करना चाहिए। शिक्षक अनेक क्रियाकलापों के द्वारा छात्र के नकारात्मक संवेगों को कम करने का प्रयास कर सकते है।

सामाजिक विकास का अर्थ है ऐसे विशिष्ट कौशलों, जैसे–सहयोग, मित्रता, सामाजिक अंत:क्रिया, नेतृत्व, अनुशासन, सहनशीलता आदि गुणों का सर्जन करना, जो सामाजिक सम्बन्धों के विकास को सहज बनाते हैं। सामाजिक व्यवहार के कई विशिष्ट आयाम हैं, जैसे–सहयोग, मित्रभाव, आत्मनियंत्रण और सामाजिक शिष्टाचार, विश्वसनीयता, सहानुभूति और समाज-सेवा, नेतृत्व आदि।

छात्रों का चरित्र निर्माण करना महत्त्वपूर्ण कार्य है। यह छात्र को जीवन में सही निर्णय लेने में सहायता करता है। नैतिक विकास को सहज-साध्य बनाने के लिए विभिन्न क्रियाकलापों का आयोजन किया जा सकता है, जैसे–प्रात:कालीन सभा, कविता, नाटक, खेलकूद, सामाजिक सेवा कार्यक्रम, महान पुरुषों की जीवनियों पर चर्चा आदि छात्र के व्यवहार में उचित परिवर्तन प्रलक्षित करती हैं। जीवन-मूल्य प्राय: जीवन भर स्थिर रहते हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. "शिक्षा को भविष्य के लिए निवेश माना जाता है" इस कथन का औचित्य सिद्ध कीजिए।

उत्तर–शिक्षा के द्वारा हमारी संस्कृति और सभ्यता का विकास होता है। यह अच्छे स्वास्थ्य को प्रदान करती है। इसके द्वारा मृत्यु दर तथा प्रजनन दर में कमी आयी है। उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

अत: ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जिनमें शिक्षा के द्वारा छात्र जीवन पर्यन्त लाभान्वित होता रहता है। इसलिए *"शिक्षा को भविष्य के लिए निवेश माना जाता है"*।

प्रश्न 2. उन क्षेत्रों की सूची बनाइए जिन पर शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर बल देने की आवश्यकता है।

उत्तर–शिक्षा के प्राथमिक स्तर जिन पर अधिक बल देने की आवश्यकता होती है, उन क्षेत्रों की सूची निम्नलिखित हैं–

1. शिक्षा सभी की पहुँच में हो तथा प्रत्येक बच्चे का विद्यालय में नामांकन हो।
2. कम से कम 14 वर्ष तक सभी बच्चे विद्यालयी शिक्षा के द्वारा लाभान्वित हों।
3. शिक्षा के स्तर में महत्त्वपूर्ण सुधार करना ताकि प्रत्येक बच्चा शिक्षा के अनिवार्य स्तर को प्राप्त कर सके।

प्रश्न 3. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा की योजना और प्रबंधन को विकेन्द्रित करने की आवश्यकता और लाभों का विवेचन कीजिए।

उत्तर–प्रत्येक राज्य के विद्यालयों में छात्रों का नामांकन कम संख्या में, छात्रों की उपस्थिति कम तथा विद्यालय छोड़ने की दर अधिक संख्या में आदि समस्यायें उपस्थित हैं।

इन समस्याओं को दूर करने, राज्यों की अलग-अलग आवश्यकताओं और साथ ही साथ प्राथमिक शिक्षा के सार्वीकरण के कारण अलग-अलग लक्ष्यों के साथ स्थानीय क्षेत्र योजना बनाए जाने की आवश्यकता पर बल दिया जाता है।

शिक्षा की योजना और प्रबंधन के अनेक लाभ हैं। इसके द्वारा लोगों में अपनत्व की भावना का विकास होता है, साथ ही साथ धरातलीय वास्तविकताएँ परिलक्षित होती हैं।

प्रश्न 4. अच्छे क्रियाकलाप के अभिलक्षणों को सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तर–अच्छे क्रियाकलापों की प्रकृति उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए, जो छात्रों के मानसिक विकास के लिए लाभदायक सिद्ध हों। अच्छे क्रियाकलापों में निम्नलिखित गुणों का होना लाभदायक तथा प्रभावकारी होता है–

1. इन क्रियाकलापों में प्रत्येक बच्चे की सहभागिता सुनिश्चित की जानी चाहिए।
2. प्रत्येक क्रियाकलाप बच्चों में सक्रिय सोच पैदा करने वाला हो।
3. छात्रों को विविध क्रियाकलापों में अपने ज्ञान और कौशल का उपयोग करने के लिए चुनौती देता हो।

प्रश्न 5. अधिगम के चार स्तम्भों के नाम बताइए।

उत्तर–अधिगम के चार स्तम्भ निम्नलिखित हैं–

1. ज्ञान प्राप्त करना या ग्रहण करना।
2. काम करना सीखना।
3. साथ रहना सीखना।
4. स्व-बोध के लिए सीखना।

प्रश्न 6. निम्नलिखित में विकास को सहज-साध्य बनाने वाले कोई चार क्रियाकलाप बताइए–

(क) शारीरिक, (ख) संज्ञानात्मक, (ग) संवेगात्मक, (घ) सामाजिक, (ङ) नैतिक।

उत्तर–**(क) शारीरिक**–समूह प्रतियोगिताएँ, क्रीड़ाएँ, नृत्य, नाटक।

(ख) संज्ञानात्मक–कविता लिखना, वाद-विवाद, भाषण-प्रतियोगिता, चित्र बनाना।

(ग) संवेगात्मक–शारीरिक व्यायाम करना, हँसमुख स्वभाव विकसित करना, सामाजिक संबंध बनाना, सहानुभूति रखने वाले व्यक्ति से बात करना।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(घ) सामाजिक–प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण, सामाजिक मिलन का आयोजन, पर्यावरण जागरूकता रैली, वृक्ष लगाओ अभियान।

(ङ) नैतिक–महापुरुषों की जीवनियों पर चर्चा, समाज-सेवा कार्यक्रम, प्रात:कालीन प्रार्थना सभा, खेलकूद।

प्रश्न 7. शिक्षा की संकल्पना को अपने शब्दों में परिभाषित कीजिए।

उत्तर–सर्वमान्य तथा व्यापक होते हुए भी शिक्षा का वास्तविक अर्थ निश्चित करना सरल कार्य नहीं है। शिक्षा की कोई एक परिभाषा देना कठिन है। विभिन्न समयों पर विभिन्न विद्वानों, दर्शनशास्त्रियों व शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षा को अपने-अपने तरीके से परिभाषित करने का प्रयास किया है। शिक्षा के संकुचित अर्थ में शिक्षा से तात्पर्य किसी विद्यालय में औपचारिक शिक्षा प्राप्त करना है तथा उसी व्यक्ति को शिक्षित समझा जाता है, जिसने विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की हो जबकि विस्तृत अर्थ में शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।

शिक्षा शब्द अंग्रेजी भाषा के Education का पर्यायवाची है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के Educatum से हुई है, जिसका अर्थ है 'आगे बढ़ना या अग्रसर करना' यानी अन्तर्निहित शक्तियों का विकास ही शिक्षा है। लैटिन भाषा के Educere व Educare शब्द शिक्षा के इसी अर्थ की ओर संकेत करते हैं। Educere का अर्थ है 'to lead out, to draw out' अर्थात् विकसित करना या बाहर निकालना तथा Educare का अर्थ है to bring up, to nourish यानी 'आगे बढ़ना' 'पालना'।

भारतीय शब्द 'शिक्षा' की उत्पत्ति संस्कृत के 'शास्' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है 'सिखाना या शिक्षित करना' अथवा 'नियन्त्रित करना'। इसी प्रकार 'विद्या' शब्द संस्कृत की 'विद्' धातु से उद्धृत है, जिसका अर्थ है 'जानना'।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का अर्थ है मानव की वैयक्तिक क्षमताओं को पहचानना तथा उसे विकसित करना।

शिक्षा की परिभाषा–अनेक विद्वानों ने शिक्षा को परिभाषित करने का प्रयास किया है। इनमें भारतीय तथा पश्चिमी दोनों विचारक सम्मिलत हैं। कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं–

1. **स्वामी विवेकानन्द** के अनुसार, *''शिक्षा मनुष्य के अंत:करण में निहित ब्रह्मभाव की अभिव्यक्ति है।''*
2. **महात्मा गाँधी** के शब्दों में, *''बालक में निहित सर्वोत्तम गुणों, शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्तियों के सर्वांगीण विकास का नाम ही शिक्षा है।''*
3. **रेमण्ड** के अनुसार, *''शिक्षा बाल्यावस्था से युवावस्था तक विकास का एक क्रम है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने भौतिक, सामाजिक व आध्यात्मिक वातावरण के साथ अपना समन्वय स्थापित करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।''*
4. **पेस्टालॉजी** के मतानुसार, *''मन:शक्तियों का स्वाभाविक, सर्वांगीण तथा प्रगतिशील विकास ही शिक्षा है।''*
5. **जान डिवी** के शब्दों में, *''शिक्षा मनुष्य की शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक शक्तियों का व्यवस्थित विकास है।''*

संकुचित अर्थ में शिक्षा–जब बच्चा पूर्व नियोजित योजना के अनुसार अध्यापक के निर्देशन में विद्यालय तथा महाविद्यालय में निर्धारित पाठ्यक्रम द्वारा औपचारिक शिक्षा ग्रहण करता है तथा निर्देशित होता है तो कहा जाता है कि बच्चा शिक्षा ग्रहण कर रहा है, जो शिक्षा का संकुचित अर्थ है।

व्यापक अर्थ में शिक्षा–विस्तृत अर्थ में शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। यह समस्त संसार शिक्षा का क्षेत्र है। प्रत्येक बच्चा अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने माता-पिता, पड़ोसी, रिश्तेदार, मित्र, अध्यापक, समुदाय तथा सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति से कुछ न कुछ सीखता है। शिक्षा के व्यापक अर्थ में संसार के सभी लोग शिक्षार्थी हैं और शिक्षक भी। मनुष्य स्वयं सीखता भी है और दूसरों को सिखाता भी है। **लॉक** के अनुसार, *''जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है।''*

वस्तुत: व्यापक अर्थ में मनुष्य का सारा जीवनकाल शिक्षा का काल ही है। यह एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपनी शक्तियों पर नियन्त्रण रखकर व्यक्तिगत अनुभवों के द्वारा सामाजिक विकास एवं उत्कर्ष में यथासम्भव सहयोग करता है।

प्रश्न 8. शिक्षा की मुख्य विशेषताओं को सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तर–प्राचीन समय से लेकर आज तक समाज व समय की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा की संकल्पना व उद्देश्य परिवर्तित व परिवर्द्धित होते रहे हैं। शिक्षा की समकालीन संकल्पना में शिक्षा की कुछ विशेषताएँ निर्धारित की गई हैं, जो निम्नलिखित हैं–

1. शिक्षा एक मानवीय उद्यम है–शिक्षा का सम्बन्ध मनुष्यों से है, जिसमें बुद्धि, संवेग तथा चेतना विद्यमान होती है। यह मानव व्यक्तित्व के सामंजस्यपूर्ण विकास से सम्बन्धित है।

2. शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है–मानव प्रत्येक पल, प्रत्येक प्राणी से कुछ न कुछ सीखता है। शिक्षा मानव के जीवनकाल में अर्जित ज्ञान तथा अनुभवों को कुल योग है। एक प्रगतिशील दृष्टिकोण रखने वाला समाज सीमित समय में दी जाने वाली शिक्षा प्रणाली को स्वीकार नहीं करता। यदि शिक्षा के प्रकार्यों को देखें तो एक प्रक्रिया के रूप में शिक्षा के तीन प्रकार्य हैं–

1. यह व्यापक होने के साथ औपचारिक, गैर-औपचारिक व अनौपचारिक सभी प्रकार की होनी चाहिए।
2. यह सामाजिक प्रगति के समग्र प्रयास में मानव संसाधन के विकास हेतु अन्तर्निवेश के रूप में सामाजिक तथा आर्थिक विकास के साथ समाकलित होनी चाहिए।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

3. यह विद्यालय व महाविद्यालय तक सीमित न होकर जीवनव्यापी होनी चाहिए।

3. शिक्षा मानव विकास है–मनुष्य का शारीरिक, संवेगात्मक, बौद्धिक तथा सामाजिक विकास शून्य नहीं हो सकता। यह एक सामान्य संस्कृति में होता है, जिसमें बच्चा विकास के सामान्य मूल्यों को और बदलते हुए सामाजिक परिवेश में समायोजन के कौशलों को सीखता है। एक शारीरिक, सांवेगिक, बौद्धिक व सामाजिक दृष्टि से विकसित व्यक्ति ही पूर्ण विकसित व्यक्ति कहलाता है। यूनेस्को ने इक्कीसवीं शताब्दी के लिए अपने शिक्षा प्रतिवेदन 'Learning a Treasure Within' में 'मिल-जुलकर रहना सीखने' को शिक्षा के केन्द्रीय स्तम्भों में एक स्तम्भ माना है।

4. शिक्षा शिक्षाप्रद अभिकरण द्वारा मानव व्यक्तित्व के विकास को दिशा देती है–शिक्षाप्रद अभिकर्त्ता, संस्था या व्यक्ति कोई भी हो सकता है। शिक्षाप्रद अभिकर्त्ता मार्गदर्शन द्वारा बच्चे को अपनी भिन्नताओं तथा आवश्यकताओं को पहचान कर अध्ययन के लिए सही पाठ्यक्रम चुनने में सहायता करता है।

प्रश्न 9. विद्यालय में प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के उद्देश्यों का उल्लेख कीजिये।

उत्तर–शिक्षा के प्राथमिक स्तर के अन्तर्गत 5-6 वर्ष से लेकर 12-13 वर्ष तक के आयु-वर्ग और पहली कक्षा से सातवीं-आठवीं कक्षा तक के बच्चों को सम्मिलित किया जाता है। इस स्तर में बच्चा सहज, जिज्ञासु, सृजनात्मक व सक्रिय होता है। शिक्षा का प्राथमिक स्तर संकल्पनाओं के निर्माण तथा सिद्धान्तों के अधिगम का काल है।

दस वर्षीय विद्यालय के लिए पाठ्यचर्या पुनरीक्षण समिति द्वारा इस स्तर में बच्चे की शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गए–

1. साक्षरता, गणन कौशल एवं हस्त कौशल जैसे औपचारिक अधिगम के साधनों का अर्जन।
2. सामाजिक तथा प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में प्रेक्षण, अध्ययन व प्रयोग द्वारा ज्ञानार्जन।
3. खेलकूद द्वारा शारीरिक बल तथा दल भावना विकसित करना।
4. शिक्षा को कार्याधारित बनाने की दृष्टि से समाजोत्पादक क्रियाओं की आयोजना तथा निष्पादन के कौशलों का अर्जन।
5. सोद्देश्य प्रेक्षण के कौशलों का अर्जन।
6. परिवार, विद्यालय व समुदाय में सहयोगात्मक व्यवहार की आदतें सीखना।
7. कलात्मक क्रियाओं में भागीदारी कर व प्रकृति के प्रेक्षण द्वारा कलात्मक दृष्टि तथा सृजनात्मकता का विकास करना।
8. दूसरे धर्मों, क्षेत्रों व अन्य देशों की संस्कृति तथा जीवन-शैलियों की व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से सराहना करने तथा कमजोर व वंचित लोगों की सेवा करने की आदतों का निर्माण कर सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना।
9. सामुदायिक जीवन की उत्पादक और अन्य प्रक्रियाओं में भाग लेने तथा समुदाय की सेवा करने की इच्छा का विकास करना।

प्रश्न 10. शिक्षार्थियों के नैतिक विकास सम्बन्धी अवधारणा को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर–छात्रों के नैतिक विकास से तात्पर्य उन्हें अपेक्षित सामाजिक व्यवहारों से परिचित कराना है। उच्च प्राथमिक स्तर, माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर बालकों ने नैतिक विकास पर उसके सामाजिक-सांवेगिक विकास का प्रभाव पड़ता है। अनेक अध्ययनों से ज्ञात होता है कि नैतिक विकास का बालकों की काम प्रवृत्ति से निकट का सम्बन्ध होता है। वस्तुतः इस अवस्था में दमन से अधिक शोधन और मार्गान्तरीकरण से काम लेना चाहिये। नैतिक विकास के सम्बन्ध में पियाजे एवं कोलबर्ग के दृष्टिकोण विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

नैतिक विकास के सम्बन्ध में पियाजे का दृष्टिकोण (Peaget's views on Moral Development)–पियाजे ने बच्चों के साक्षात्कार के आधार पर नैतिक विकास की निम्नलिखित अवस्थाएँ बताई हैं–

(1) अनियमित	(5 वर्ष तक)
(2) विषम जातीय अधिकार	(5-8 वर्ष)
(3) विषम जातीय परस्परता	(9-13 वर्ष)

(1) अनियमित (Anomy)–पियाजे ने बालक के प्रथम 5 वर्ष की अवस्था को अनियमित कहा जो कानून को महत्त्व नहीं देता। इस अवस्था में बालक न तो नैतिक होता है और न ही अनैतिक अर्थात् उसका व्यवहार नैतिक स्तर से नियन्त्रित नहीं होता है। खुशी और दुःख उसके व्यवहार को नियन्त्रित करते हैं।

(2) विषमजातीय अधिकार (Heteronomy Authority)–इस अवस्था में नैतिक विकास प्रौढ़ों के दबाव के फलस्वरूप होता है। नैतिक विकास का नियन्त्रण बाह्य अधिकार द्वारा होता है। यह विकास पुरस्कार और दण्ड के द्वारा नियन्त्रित होता है।

(3) विषमजातीय-परस्परता (Heteronomy Reciprocity)–इस अवस्था में नैतिक विकास समकक्ष या सहपाठियों के सहयोग से होता है और परस्परता पर निर्भर होता है। इसमें यह धारणा अपनाई जाती है कि हमें ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जो हमारे लिए आक्रामक हो।

(4) स्वशासित (Autonomy)–पियाजे इसे समान अवस्था (equity stage) कहता है। जब परस्परता की माँग समान हो जाती है, स्वशासित बराबर होते हैं तो स्वशासित नैतिक विकास होता है। इस अवस्था में व्यक्ति अपने व्यवहार के लिए पूर्ण रूप से उत्तरदायी होता है।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com